इकाई 10 उत्तरदायी पर्यटन लाभ

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन
  10.2.1 प्रति सांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन
  10.2.2 सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन
10.3 लाभ
10.4 समस्याएं
10.5 क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं?
  10.5.1 सरकार की भूमिका
  10.5.2 उद्योग की भूमिका
  10.5.3 स्थानीय निवासियों की भूमिका
10.6 सारांश
10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप यह समझ सकेंगे कि:

- उत्तरदायी पर्यटन किस प्रकार पर्यावरण सुरक्षा में सहयोग देता है?
- उत्तरदायी पर्यटन से सम्बन्धित समस्याएं क्या हैं और उनके क्या समाधान उपलब्ध है?
- सरकार, उद्योग और स्थानीय निवासी पर्यटन उद्योग को विकसित करते समय पर्यावरण को सुरक्षित रखने में क्या भूमिका निभाते है।

10.1 प्रस्तावना

एक ओर तो पर्यटन बहुत से सामाजिक एवं आर्थिक लाभ देने वाला कार्यक्रम है और दूसरी तरफ उसके दुष्प्रभाव भी है (इकाई 8 और 9 देखिए)। पर्यटन के क्षेत्र में जिम्मेदारी का बोध पैदा करके दुष्प्रभावों को समाप्त किया जा सकता है। हम ऐसे पर्यटन को विश्वस्त अथवा वैकल्पिक पर्यटन का नाम देंगे। जैसा कि इस खण्ड की दो पिछली इकाइयों में चर्चा की गई कि पर्यावरण को सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साधन के रूप में भी उपयोग किया जा रहा है। किन्तु ये बढ़ता हुआ पर्यटन एक मौलिक समस्या प्रस्तुत करता है। अन्य देशीय औद्योगिक राष्ट्रों से आने वाले पर्यटकों की अनियन्त्रित बाढ़ विकासशील देशों में पर्यावरणीय विनाश, सांस्कृतिक मतभेदों और सामाजिक तनाव की समस्याएं खड़ी कर देती है। पर्यटन के इन दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए अधिक प्रभावी नीतियां नहीं सोची गईं, और जो सोची भी गईं उनका समग्र रूप से कार्यान्वन नहीं हो सका है। फिर भी ये नीतियां पूर्णरूप से असफल नहीं हुई हैं क्योंकि उन्होंने जागरूकता का स्तर बढ़ाया है और पर्यावरण विशेषज्ञों के मध्य विचार विमर्श का मुद्दा प्रस्तुत किया है। किन्तु समस्या के हल अब भी मूलरूप से सैद्धान्तिक ही हैं और वह भविष्य के लिए कोई उपयोगी व्यवहारिक उत्तर प्रस्तुत नहीं करते। इस समस्या से निपटने के लिए ही उत्तरदायी पर्यटन की धारणा पर बल दिया जाने लगा है। इस इकाई में हम उत्तरदायी पर्यटन की धारणा को लाभ, संबंधित कठिनाइयों और उत्तरदायी पर्यटन से पैदा होने वाली समस्याओं के दृष्टिकोण से सविस्तार वर्णित करेंगे। इस इकाई में हम उत्तरदायी पर्यटन के क्षेत्र में सम्बद्ध नियम और नीतियाँ बनाकर प्रोत्साहित किए जाने में सरकार की भूमिका की चर्चा भी करेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तरदायी पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों के साथ ही इस इकाई में हम नकारात्मक या दुष्प्रभावों को भी चर्चा का विषय बनाएंगे। इसमें उद्योग और स्थानीय निवासियों द्वारा उत्तरदायी पर्यटन को बढ़ावा देने में निभाई गई भूमिकाओं पर भी विचार किया गया है।

10.2 उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन

वैकल्पिक पर्यटन एक ऐसा पर्यटन है जो यात्रा के अनुभवों की रक्षा करने के अतिरिक्त लोगों के मध्य आपसी समझ को भी बढ़ाता है, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक ह्रास और इन से भी अधिक स्थानीय जनसंख्या के शोषण और मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोकता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे उत्तरदायी पर्यटन भी कहते हैं। वैकल्पिक पर्यटन पर्यटकों को ''विश्वसनीय'' अनुभव का बोध भी करा सकता है किन्तु ये उसका मुख्य कार्य नहीं है। वास्तव में ये ''रोमानी अनुभव'' चाहने वाले और रोमांचक सांस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले पर्यटकों का आलोचक है जो आतिथेय (स्थानीय) परिवेश पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

इस प्रकार वैकल्पिक पर्यटन उत्तरदायी पर्यटन का पर्याय है। ये तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि वैकल्पिक पर्यटन की सहायता से हम पर्यटन उद्योग द्वारा प्रस्तुत समस्याओं को नियन्त्रित कर सकते हैं। उत्तरदायी पर्यटन की व्याख्या एक ऐसे व्यापक शब्द के रूप में की जा सकती है जो सब पक्षों का अधिक ध्यान रखने वाले और जागरूक प्रकार के पर्यटन को अपने अन्दर सम्मिलित रखता है। इसके उपसर्गों में वैकल्पिक, उपयुक्त, टिकाउ, कोमल, हरत आदि आते हैं। उत्तरदायी पर्यटन में स्थानीय समुदाय पर्यावरण के विषय में निर्णय लेने में और पर्यटन विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। स्थानीय समुदाय विकास की गति को भी नियन्त्रित करते हैं जो अनिवार्य है। अपनी मन्जिल तक पहुंचने से पहले ही पर्यटक की जागरूकता बढ़ाना और उन्हें स्थानीय पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अत: इस प्रकार के पर्यटन में शिक्षा प्रमुख भूमिका निभाती है। वैकल्पिक पर्यटन के विचार का श्रोत दो समकालीन वैचारिक चिन्तनों में है।

- एक तो आधुनिक उपभोक्तावाद के सांस्कृतिक अस्वीकरण में है, और दूसरा
- तीसरी दुनिया के समाजों पर आधुनिक औद्योगिक विकास के प्रभाव के प्रति चिन्ता है।

यह दोनों चिन्तन अलग अलग दृष्टिकोण से परम्परागत पर्यटन की सस्याएं उठाते हैं और उसकी आलोचना करते हैं। अत: ये वैकल्पिक पर्यटन की विविध धारणाओं पर विचार करते हैं। इसका वर्णन इस इकाई के भाग 10.4 में किया गया है।

10.2.1 प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन

प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन मूल्यों, उद्देश्यों, और व्यवहार में परम्परागत सामूहिक पर्यटन पद्धति को उलट देता है। प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटक की कल्पना एक ऐसे यात्री की है जो केवल मनोरंजन, मन बहलाव अथवा विश्रांति के लिए ही नहीं निकलता। वह केवल एक साहसी है या जो अपने, घर, समाज और संस्कृति को त्याग कर दूसरों की दुनिया के अनोखे पन को खोजता/खोजती है और असली जीवन को अनुभव करना चाहता/चाहती है। ये यात्री अकेले होते हैं या छोटे-छोटे समूहों में यात्रा करते हैं। उन्हें कोई जल्दी नहीं होती और वह अपनी रुचि, परिस्थितियों और अवसर के अनुरूप अचानक योजना बदल देते हैं। एक 'आदर्श पर्यटक' आत्मनिर्भर और उत्साही होता है जो विनम्र कृषकों और जन जातिय लोगों के आतिथेय को स्वीकार करता है। उनका भोजन और जल, अपने स्वास्थ्य तथा सुख की परवाह किए बिना, ग्रहण करते हैं। वह संरक्षण के प्रयासों में भी भागीदारी करते हैं और पर्यावरणीय सुरक्षा में योगदान भी देते हैं।

10.2.2 सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन

सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन को विभिन्न समुदायों के सदस्यों के मध्य एक उचित प्रकार की यात्रा के रूप में परिभाषित किया गया है। ये सहभागियों के मध्य, पारस्परिक, पूर्ण एकता और समानता की प्राप्ति की खोज है। ये सामूहिक और रक सैक (अपनी पीठ पर अपना बैग लेकर चलने वाले पर्यटक) पर्यटन दोनों के लिए एक विकल्प है। इसके समर्थक पर्यटकों की मनोवृत्ति और स्थानीय लोगों के साथ सम्बन्धों तथा उसके नतीजे में उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों पर बल देते हैं। इस उचित पर्यटन का उद्देश्य ये है कि दोनों पक्षों को आपस में व्यक्तिगत एवं आर्थिक रूप से समान लाभ प्राप्त हो। इस प्रकार के पर्यटन को प्रोत्साहित करने के प्रमुख साधन उन्नतशील देशों में स्थापित छोटे स्तर की योजनाएं हैं जिन्हें स्थानीय लोगों के परामर्श और भागीदारी के अनुसार स्थापित किया गया है। वे विशिष्ट रूप से पर्यटकों के छोटे समूहों को ऐसे क्षेत्रों में आकर्षित करते हैं जहां उन्हें स्थानीय लोगों से समानता के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से आपस में क्रियाशील होने और अपने वास्तविक जीवन तथा समस्याओं के परिष्कार का अवसर मिलता है। पर्यटकों को अपने ठहरने के लिए भुगतान करना पड़ता है और इसके अतिरिक्त और कोई शोषण नहीं होता।

10.3 लाभ

वैकल्पिक पर्यटन के वास्तविक लाभों को ठीक से समझने के लिये हमें निम्नांकित बातों पर विचार करना चाहिए। सामूहिक पर्यटन अथवा बने बनाए पर्यटन पैकेज की तुलना में वैकल्पिक पर्यटन कई प्रकार से भिन्न है जैसे कि:

- भ्रमण की अवधि,
- समूह का आकार,
- निर्धारित धन राशि जो उनके पास खर्च करने के लिए है,
- भ्रमण के उद्देश्यों में सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य।

इन पर्यटनों को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है :

- अध्ययन-भ्रमण,
- सांस्कृतिक महत्व का पर्यटन,
- विकास योजना यात्रा, और
- ग्रामीण यात्रा एवं ठहरने का कार्यक्रम।

किन्तु ये सारे भ्रमण घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं और उनके मध्य भेद करना सरल नहीं है। कभी कभी ये इनमें से कुछ के सम्मिश्रण होते हैं या संभवत: ये सारे विषय सामूहिक रूप से उपस्थित होते हैं। इन पर्यटकों के मनुष्य से मनुष्य के सम्पर्क को एक ऐसे वातावरण में प्रोत्साहित करने का प्रयास या सहायता होती है जहां यात्री और आतिथेय एक ही छत के नीचे बैठ सकें और एक दूसरे के साथ सांस्कृतिक या विचारों का आदान प्रदान कर सकें।

पर्यटन की व्यवस्था एक सकारात्मक उद्देश्य के अनुसार की जाती है और इसमें अनुकूलन व्याख्यान सम्मिलित होता है जिसमें पर्यटक बैठते हैं और आतिथेय (स्थानीय लोगों) से उनके क्षेत्र की विशिष्ट संस्कृति, पर्यावरण एवं सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के विषय में सुनते हैं ताकि वह वहां की परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को अनुकूलित कर सकें। स्लाइड प्रोजेक्टर, आडियो-वीडियो, बुद्ध जीवियों, अनुभवी विकास कार्यकर्ताओं और सम्बद्ध लोगों या विशिष्ट मुद्दों में विशेषता रखने वालों की भूमिका अनुकूलन व्याख्यान को अधिक शिक्षाप्रद और रुचिकर बनाने में निर्णायक होती है।

आवास स्थानीय परिवहन, भोजन, ग्रामीण गतिविधियां और वित्तीय प्रबंध सहित सारे सम्पर्क और व्यवस्थाएं स्थानीय सहभागियों द्वारा की जाती हैं यह स्थानीय लोग पेशेवर संस्थाओं की अपेक्षा स्थानीय परिस्थितियों को अधिक अच्छी तरह समझने की स्थति में होते हैं। इन स्थानीय व्यक्तियों के माध्यम से ही हम ग्रामीण आतिथेयों से पर्यटकों के व्यवहार और विचारों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वह मूल निवासियों से जुड़े हुए हैं। ऐसी व्यवस्था की जाती है कि स्थानीय निवासी एक ही छत के नीचे पर्यटकों से समान अधिकारों के साथ बैठ कर बात कर सकें। इस प्रकार के समग्र पर्यटक को एक रूपता के साथ व्यस्थित कर के पर्यटन पैकेज बनाए जाते हैं।

इस प्रकार के पर्यटन में उन लोगों के अतिरिक्त जो केवल पर्यटन सेवाएं उपलब्ध करवाने में लगे हैं अन्य व्यक्तियों से भी मिलने और आदान-प्रदान करने का अवसर बिलकुल वैसे ही मिलेगा जैसे परम्परागत पर्यटन में होता हैं। ऐसे पर्यटन में विकास कार्यकर्ता, विश्वविद्यालीय बुद्ध जीवी, पर्यावरण विशेषज्ञों और प्रकृति प्रेमी आदि सम्मिलित होते हैं। स्थानीय लोगों को भी बाहर से आए मित्रों से मिलने का अवसर मिलता है जो सांस्कृतिक बाधाओं को फलांगने की इच्छा व्यक्त करते हैं और पर्यटन के परम्परागत ढांचे से भी आगे निकल जाना चाहते हैं। पर्यटन में अन्तरभेदों को पाटने को पाटने की सर्वोच्च संभावनाएँ हैं भिन्न-भिन्न लोगों के बीच जानकारियों का आदान प्रदान करने का भी यह एक अच्छा माध्यम है।

इस प्रकार वैकल्पिक पर्यटन पर्यावरण के निकट होने का काफी अवसर प्रदान करता है। ये विभिन्न समुदायों की मूलभुत सांस्कृति मान्यताओं को भी सुरक्षित रखने में सहयोग करते हैं। जहां इस प्रकार की यात्राएं होती हैं वहीं ये सहयोग संभव है। इसके साथ ही इस प्रकार का पर्यटन अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय भ्रातृभाव, शान्ति और सद्भावपूर्ण सह अस्तित्व के वास्तविक साधन के रूप में कार्य करता है।

बोध प्रश्न 1

1) "वैकल्पिक पर्यटन की समस्या का एक वैकल्पिक उत्तर प्रस्तुत करता है"। समीक्षा कीजिए।

.....

.....

.....

2) दो वैकल्पिक पर्यटकों का नाम बताइए और उनकी विशेषताओं का इस प्रकार उल्लेख कीजिए कि उनके मध्य के प्रमुख भेद स्पष्ट हो सकें।

.....

.....

.....

10.4 समस्याएं

बहुत से लोगों के द्वारा एक समाधान के रूप में देखे जाने के बावजूद वैकल्पिक पर्यटन पर संदेह व्यक्त किया जाता है। बी. व्हीलर ने अपने लेख 'पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ पर्यटन और पर्यावरण एक-सहजीवी, प्रतीकी अथवा बनावटी-संबंध' (1994) (B. Wheeler, ego tourism, sustainable tourism and the environment–a symbiotic, symbolic or a shambolic relationship) में लिखा है:

आजकल पारिस्थितिक पर्यटन साफतौर से और सरलतापूर्वक परिमाण और समूह के संभावी मुद्दों की उपेक्षा करता प्रतीत होता है। पर्यटन में बढ़ती हुई भागीदारी के प्रक्षेप के रूप में, पारिस्थितिक पर्यटन सहित पारिस्थितिक/टिकाऊ पर्यटन की व्यर्थता, जहां तक मैं समझता हूं, दुखदायी रूप से स्पष्ट होकर समझ में आ जाती है।

पर्यटकों की संख्या अधिक से अधिक होती जाएगी और व्हीलर दावा करते है कि "पारिस्थितिक पर्यटन इस विस्फोट से उन्मुक्त नहीं है" इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे पारिस्थितिक पर्यटकों का समूह बढ़ेगा वैसे ही वैसे समस्त सम्बद्ध समस्याएं इस क्षेत्र को भी प्रभावित करेंगी। पर्यटन उद्योग के बहुत से लोग अब इसका बाजार के एक धन्धे के रूप में उपयोग करने लगे हैं।

एक और प्रश्न जो व्हीलर ने प्रस्तुत किया है वह पर्यटकों के व्यवहार के संबंध में है। इस बात की कोई जमानत नहीं है कि पारिस्थितिक पर्यटक अथवा वैकल्पिक पर्यटक सामूहिक पर्यटक की अपेक्षा अलग ढंग से व्यवहार करेगा अर्थात वह भी कम से कम खर्च कर के अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहेगा। वह मानता है कि पर्यटन सदैव शोषण के तत्व को सम्मिलित करेगा क्योंकि ये "एक मानवीय क्रिया" है।

- व्यापारिक प्रबन्धक लाभ से प्रेरित होता है,
- पर्यटक अपने स्वार्थ से अर्थात् 'इसमें मेरे लिए क्या है' जैसी मनोवृति से प्रेरित होता है, और
- आतिथेय (स्थानीय) समुदाय पर्यटक से कुछ न कुछ ऐंठना चाहता है।

ये विशेषताएं वैकल्पिक पर्यटन या किसी भी अन्य प्रकार के पर्यटन में हो सकती है।

इसी प्रकार पर्यटकों और अतिथियों के मध्य आदान प्रदान और प्रत्यक्ष अनुभव नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभावों की संभावनाओं को कम नहीं करता। स्थानीय समुदायों के देशी लोग पर्यटकों को अतिथिय-सत्कार की भावना के साथ स्वागत करते हैं और इस प्रक्रिया के दौरान मूल बातों में पश्चिमी तौर तरीकों को अपनाते हैं। इस प्रकार वह पर्यटन के तीव्रता से बढ़ते अत्याधिक प्रतिकूल प्रभावों और अन्तर्वेधी लक्षणों से भी बड़े पैमाने पर प्रभावित होते हैं।

एक चिन्तामय पर्यटन के लिए आदर्श वाक्य है "छोटे पैमाने पर मन्द और संतुलित विकास"। किन्तु इस आदर्श को वास्तविक रूप देन में अनेकों कठिनाइयां एवं मौलिक आर्थिक दुविधाएं हैं। यदि पर्यटन को क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष में आय और नौकरियों की सार्थक संख्या पैदा करनी हो तो विकास के आकार को सीमित कैसे किया जा सकता है? इसका परिणाम ये है कि पर्यटन विकास ने प्राय: क्षेत्र की संरचनात्मक

सुविधाएं और ठोस प्रबंधन प्रस्तुत करने की क्षमता से भी आगे बढ़ कर कार्य किया है (डी.डब्ल्यू. रॉबिन्सन, वैकल्पिक पर्यटन हेतु नीतियां, strategies for alternative tourism. (1994)। खुम्बु (सागरमठ राष्ट्रीय उद्यान, नेपाल) का उदाहरण देते हुए रॉबिन्सन ने उल्लेख किया कि पर्यटन से सम्बद्ध क्षेत्र ऐसी पर्यावरणीय समस्याएं प्रस्तुत करते हैं जिनमें वनों का विनाश, भंगुर धरातल पर भूमि उपयोग को लेकर प्रतिस्पर्धा और मलबे का निपटारा सम्मिलित हैं। आर्थिक प्रवर्धक प्रभाव ने स्थानीय लोगों को धनी बनाया है वे स्वयं ही संसाधनों का शोषण कर रहे हैं जैसे जंगल में नई कुटीरों या धनी परिवारों के लिए बड़े घरों के निर्माण हेतु जंगल काटना। पैदल यात्रा के मार्गों पर कूड़ा-कचरा फेंकना, इधर उधर मल मूत्र का विसर्जन आदि गन्तव्य के लिए खतरा प्रस्तुत करते हैं। और ये समस्त पर्यावरणीय विनाश एक ऐसे गन्तव्य में हो रहा है जिसे वैकल्पिक पर्यटन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और जो ऐसे ही पर्यटन के लिए जाना पहचाना जाता है।

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था कमजोर है और उन्हें अधिक विदेशी मुद्रा विनिमय की आवश्यकता होती है। अत: वह कभी कभी पर्यटन विकास के नियन्त्रण के सन्दर्भ में असहाय सिद्ध हैं। ऐसे देश जहां पर्यटन विकास पर नियन्त्रण के प्रति समुदाय-आधारित धारणा पाई जाती है उन समुदायों की अपेक्षा ज्यादा अच्छे प्रतीत होते हैं जहां आर्थिक व्यवहार्यता पर आधारित स्थापित शक्तिशाली तंत्र है। वह चयनात्मक होने का सामर्थ रखते हैं। किन्तु सूक्ष्म-स्तर पर यह "अनुचित" विकास को रोक नहीं सकते वह केवल इसे किसी ऐसे विशेष क्षेत्र या समुदाय को स्थानान्तरित कर देंगे जो अपने भाग्य और नीतियों के निर्धारण की पूर्ण क्षमता नहीं रखते। "समुदाय उपागम" (दृष्टिकोण) से ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यन्त शक्तिमान सदैव शक्तिमान ही रहता है।

उत्तरदायी पर्यटन को संवेदनशील आयोजन प्रणाली की अपेक्षा व्यवसायिक साधन के रूप में अधिक अपनाया जा रहा है। सूक्ष्म स्तर पर पर्यटन को संभवत: समझदारी के साथ आयोजित किया जा सकता है किन्तु बड़े स्तर पर इस कार्य की बृहतता और जटिलता के कारण से कठिन, और अनियन्त्रित हो जाता है जिसे नियोजित नहीं किया जा सकता।

वैकल्पिक पर्यटन का सिद्धांत परम्परागत पर्यटन को सम्पूर्ण रूप से अस्वीकार करता है वह इसके स्थान पर सम्पूर्ण रूप से विकसित विकल्प के लिए संघर्ष करता है। इस कारण यह पर्यटक संस्थाओं और सामूहिक पर्यटन के लिए इसके अन्दर के सुधार के किसी प्रयत्न में पर्यटन उद्योग के अंग के रूप में शामिल नहीं हो पाता। वर्षों से पर्यटन उद्योग और पर्यटन लॉबी के समर्थकों ने योजना की नीतियों का स्वागत किया है। किन्तु विडम्बना ये है कि स्वयं उत्तरदायी पर्यटन की निष्फलता एक ऐसे उद्योग द्वारा सार्वभौम पर्यटन नीति की प्रत्यक्ष स्वीकृति देखने की संभावना है जो एक बेहतर प्रतिरूप और अभिनव स्वरूप में देखे जाने के लिए उत्सुक है। अन्य उद्योगों की अपेक्षा पर्यटन उद्योग प्रकट रूप से हरित हो जाने में अधिकलाभ देख सकता है। उत्तरदायी पर्यटन विचारशील पर्यटकों को अवकाश का अनुभव करा के संतुष्ट करता है। उद्योग प्रसन्न है क्योंकि वैध रूप से पर्यटन के नए क्षेत्र प्रारंभ करके और किसी सहायता के बिना सार्वभौम आधार पर पर्यटन के विकास की मांग को बिना रोक टोक के पूरा किया जा सकता है। ये उत्तरदायी पर्यटन की धारणा को व्यवहार में सतही बना देता है। इन जटिल मुद्दों के होते हुए ऐसे विचार व्यक्त किए गए हैं जैसे हर कदम, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो समग्र उत्तरदायी प्रभाव के कुल योग में से कुछ में वृद्धि करता है" (के.वुड. और एस. हाउस, दि गुड टूरिस्ट, 1991) यहां इस बात का सार ये है कि कुछ करना कुछ न करने से बेहतर है।

10.5 क्या प्रयत्न किए जा रहे है?

बहुत से देशों में गैर सरकारी संस्थाएं, सरकारी पर्यटन की संस्थाएं आदि ने टिकाऊ पर्यटन के विकास के लिए प्रयास प्रारंभ किए और उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन के विकास की ओर भी प्रयत्नशील रहे। इन पर बहुत से सम्मेलनों, कार्य शिविरों या परिसंवादों में विचार विमर्श और वाद विवाद किया जा चुका है और इस संदर्भ में उत्पन्न मुद्दों ने भी अनुसन्धान और प्रभाव एवं सूक्ष्म और वृहत् स्तरों पर इसके औचित्य के अध्ययनों को प्रोत्साहित किया है। उदाहरणार्थ, जेम्स आर मेक ग्रेगर ने अपने लेख "टिकाऊ विकास (sustainable development) (1994)" में इन मुद्दों का सविस्तार वर्णन किया है। उसने उन सात सिद्धान्तों का उल्लेख भी किया जिन्होंने कनाडा में पर्यटन क्षेत्र के अध्ययन का मार्गदर्शन किया है।

1) सम्पूर्ण विश्व में और विशिष्ट क्षेत्र (स्थानीय स्तर) पर मानव प्रभाव को एक ऐसे स्तर तक सीमित रखा जाए कि वह निर्वहन क्षमता में ही सीमित रहे।

2) क्षेत्र के कुल जैव धन को कायम रखना। इसमें निम्न शामिल होना चाहिए:

- जीवन निर्वाह सेवाओं को सुरक्षित रखना,

- प्रकृति की विविधता को सुरक्षित रखना, और
- सुनिश्चित करना कि सारे संसाधन प्रभाव टिकाऊ हैं।

> मेक ग्रेगर के अनुसार जीवन निर्वाह सेवाएं वह पारिस्थितिकीय प्रक्रियाएं हैं जो धरातल, वायु, जल और जैविक जीवन को उत्पादी होने, पर्यटन समूह के अनुकूल होने और स्वयं के पुनर्विवेचन की अनुमति देता है।

3) पुन: उपयोग में न ला सकने वाले संसाधनों के रिक्तीकरण को कम से कम करना जैसे, प्लास्टिकों, धातुओं, जीवाश्म ईन्धन आदि।

4) लम्बी अवधि के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए जो किसी आरक्षित भंडार से होने वाले लाभ को बढ़ाता है। इसमें सौर्य उर्जा के उपयोग, अपशिष्ट के पुन: प्रयोग आदि को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

5) संसाधन उपयोग और पर्यावरणीय प्रबन्धन के लाभों और खर्चों के समान वितरण का प्रबन्ध होना चाहिए।

6) ऐसे नियमों में, जो उन्हें सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, समुदायों और सम्बद्ध वर्गों की प्रभावी भागीदारी का प्रबन्ध।

7) ऐसी मान्यताओं को प्रोत्साहन जो दूसरों को सम्पोषण की योग्यता प्राप्त करने में सहयोग देती है। वास्तव में इस की सिफारिशों की प्रतिध्वनि विश्व के प्रत्येक भाग में सुनाई देती है।

10.5.1 सरकारों की भूमिका

उत्तरदायी पर्यटन के विचारों को सफल बनाने के सम्बन्ध में सरकार पर भी भारी उत्तरदायित्व है। ये ध्यान देने योग्य है कि पर्यावरणीय मुद्दे केवल कानून पारित करके नहीं निपटाए जा सकते। प्राय: सरकार के विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय नहीं होता। ये न केवल संभ्रानित पैदा करता है बल्कि कानून और नियमों की अवज्ञा के लिए बहाना प्रस्तुत करता है।

बहुत अच्छी तरह लिखे गए कानून बच निकलने के बहुत कम अवसर देते हैं। विशेषकर जानबूझ कर पर्यावरण को अधिकृत अथवा अनाधिकृत रूप से नष्ट करने वालों की रोकथाम में बहुत अच्छी तरह तैयार किए गए कानून से बहुत अन्तर पड़ता है। ऐसे कानून जन समूह-उत्साही नागरिकों और पर्यावरणीय वर्गों को अपने कार्यान्वयन के लिए संघर्ष करने का अवसर प्रदान करते हैं। फिर भी खराब कानून विशेषकर वह जिनकी रचना लापरवाही से की गई हो लाभ पहुंचाने के स्थान पर हानि अधिक पहुंचा सकते हैं क्योंकि वह पर्यावरणी आदर्शों की आज्ञा करने का कानूनी आधार देते हैं। वह कानूनी उपाय प्रस्तुत करने का आभास भी उत्पन्न करते हैं जबकि वास्तव में वह शायद ही किसी काम के हों। कभी-कभी किसी विधेयक के मसौदे पर सार्वजनिक विचार विमर्श से उसकी विशेष कमियों को दूर किया जा सकता है (विस्तृत विवेचन हेतु इकाई-21 खण्ड-6 देखिए।)।

कानून पर्याप्त है या नहीं यह महत्वपूर्ण है परन्तु इसके अतिरिक्त उसकी सफलता उन अधिकारियों की राजनैतिक इच्छा पर भी निर्भर है जो इसे कार्यान्वित करते हैं। बहुत से अच्छे कानून बेकार हो गए क्योंकि उसके पीछे राजनैतिक इच्छा शक्ति नहीं थी। केन्द्र में पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय का जो अनेकों पर्यावरणीय कानून लागू करवाने में सहायक सिद्ध हुआ, की सफलता असफलता मिली जुली रही है। उस ने कुछ मामलों में जनता से परामर्श के लिए समय दिया जबकि कुछ दूसरे मामलात में ये नहीं किया। वह इन कानूनों के कार्यान्वयन के अपने संकल्प के संपादन में भी सम्पूर्ण निरंतरता नहीं रख पाया।

इस प्रकार पर्यटन उद्योग की समस्याओं को घटाने में सरकारी नीतियों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय निम्नकर की समस्या का हल भी इन्हीं सरकारी नीतियों से निकलेगा। सरकारी चिन्ता के बिना कोई पर्यावरण को बचा नहीं सकता क्योंकि सरकार के पास ही विस्तृत अधिकार और नियमों को लागू करने का तंत्र होता है। सरकार की ओर सकारात्मक वैकल्पिक पर्यटन के सकारात्मक विकास का कारण बनेगी।

सरकार की ओर से कुछ निश्चित उपाय करने पड़ेंगे और उन्हें कार्यान्वित करना पड़ेगा, उदाहरणार्थ:

- प्रत्येक गन्तव्य की निर्वहन क्षमता को पारिभाषित करना चाहिए और इस संदर्भ में विशिष्ट दिशा निर्देशन होना चाहिए।
- ये सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि गन्तव्य पर पर्यटन को भूमि उपयोग योजना का अभिन्न भाग समझा जाए और वहां पर्यावरण निर्माण कार्यों के लिए दिशा निर्देश पर्यावरण के हितों को देखते हुए बनाए जाएं।

- अपराधियों को निश्चित सजा मिलनी चाहिए और कानून तथा नियमों की आवज्ञा के लिए कोई राजनैतिक दबाव नहीं होना चाहिए। बल्कि कानूनों को लागू करने वाले व्यक्ति और संस्थाओं को इस प्रकार के अधिकार होना चाहिए कि वह अपना कर्तव्य अर्थ पूर्ण ढंग से निभा सकें।
- पर्यावरण जागरूकता उत्पन्न करने के लिए हर प्रकार के प्रचार माध्यमों का उपयोग करना चाहिए। पर्यटन में विश्व बहुत तीव्रगति से अग्रसर होता है। ये संदेश एक बार जैसे ही उद्योगों और पर्यटकों को स्पष्ट रूप समझ में आ जाएगा कि सरकार या स्थानीय अधिकारी जहां तक पर्यावरणीय सुरक्षा का सम्बन्ध है गंभीर है और नियम या कानून औपचारिकता मात्र नहीं हैं इन्हें कठोरता से लागू किया जाता है तो परिणाम अवश्य ही सामने आएंगे।

10.5.2 उद्योग की भूमिका

- इससे पूर्व ये बताया जा चुका है पर्यटन उद्योग पारिस्थितिक पर्यटन या वैकल्पिक पर्यटन को एक नारे के रूप में या बाजार के धन्धे के रूप में केवल लाभ को बढ़ाने के लिए उपयोग कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि उद्योग में पारिस्थितिकीय विनाश या पर्यावरणीय निम्नीकरण पर चिन्ता करने वाले नहीं है अवश्य है पर उनकी संख्या कम हो सकती है। यदि वह जो पर्यटन उद्योग चला रहे हैं अपनी भावी पीढ़ियों को भी इस व्यापार में देखना चाहते हैं तो सरकार के साथ साथ उद्योग वालों को भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी। सरकार कानून बनाती है और उनका कार्यान्वयन उद्योग करता है। वह भूमिकाएं जिन्हें उद्योग निभाता है वह हैं:
- अपने ग्राहकों (पर्यटकों) को पर्यावरणीय मुद्दों के सम्बन्ध में संवेदनशील बनाना चाहिए और नियमों आदि के विषय में उन्हें हर प्रकार की जानकारी अपने व्यवसाय के एक कार्य के रूप में समय से दे देनी चाहिए।
- अपने कर्मचारियों और अधिकारियों को उत्तरदायी पर्यटन के सम्बन्ध में शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना। पर्यटन क्षेत्र सबसे बड़ा नियोक्ता (सम्पूर्ण विश्व में 1200 लाख से अधिक कर्मचारी) होने के कारण कल्पना करता है कि उत्तरदायी पर्यटन के पक्ष में एक सशक्त आन्दोलन अपने आप प्रारंभ होगा।
- ये सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि स्वयं उनका अपना निर्माण कार्य या अधि संरचनात्मक सुविधाओं का विकास कार्य पर्यावरण के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार द्वारा नियन्त्रित होगा। उदाहरणार्थ पारिस्थितिक अनुकूल वास्तुशिल्प, अपशिष्ट का पुन: प्रयोग, नवीनीकरण योग्य ऊर्जा के उपयोग आदि को किसी सैर गाह के विकास में या किसी परियोजना की रूपरेखा बनाने में सम्मिलित किया जा सकता है।
- पर्यावरणीय लेखा परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि वह उसे क्षेत्र में अपने व्यवसाय में किए गए कार्यों का मूल्यांकन कर सकें।
- जो पर्यावरण आदि के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाते हैं उनके साथ व्यावसायिक सम्बन्ध रखना।

मेक ग्रेग ने सुझाव दिया कि "पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एक सामूहिक लक्ष्य बन सकता है जो पर्यटन उद्योग में शामिल सब लोगों (ग्राहकों, प्रबन्धकों, निवेशकों, हिस्सेदारों कर्मचारियों, नीति निर्धारकों) के विचार प्रतिबिंम्बित करेगा।" परिणामस्वरूप एक टिकाऊ आधार मिलेगा जो पर्यटकों और पर्यटन उद्योग के संचालकों की भावी पीढ़ियों के लिए बना रहेगा और छोटे व्यक्तिगत व्यवसायों के लिए उपयोगी भी होगा"।

10.5.3 स्थानीय निवासियों की भूमिका

सरकार और उद्योग के अतिरिक्त किसी गन्तव्य के स्थानीय निवासियों को भी उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन की उन्नति के दायित्व में भागीदारी करनी पड़ेगी। ऐसा इसलिए और भी है कि नकारात्मक प्रभावों या गलत नीतियों के कारण सबसे अधिक हानि स्थानीय निवासियों को ही होगी। सामान्य रूप से ये देखा गया है कि पर्यटन के लाभों में साझेदारी-करने के लिए स्थानीय लोगों में अपने ही पर्यावरण की उपेक्षा करने या क्षतिग्रस्त करने की प्रवृत्ति होती है। बहुत से गन्तव्यों पर जहां स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति सुधर चुकी है वहां उन स्थानीय लोगों ने नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन किए बिना अपने धन को विकास के लिए लगा दिया है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति के पास एक छोटा सा 10 कमरों का वास स्थान था। आमदनी बढ़ने के साथ ही उस व्यक्ति ने स्थानीय भवन निर्माण के प्रतिवेश पर ध्यान दिए बिना अपने घर में मन्जिलों पर मन्जिलें बनवानी शुरू कर दीं ताकि उसके व्यवसाय में उन्नति हो। इसी प्रकार स्थानीय लोग कूड़े कचरे के निपटाने की चिन्ता भी नहीं करते। इस प्रकार का विकास तत्कालिक लाभ तो देता है किन्तु ऐसे गन्तव्यों का जीवनकाल छोटा हो जाता है और

दीर्घकालिक क्षति पहुंचती है। अत: ये आवश्यक है कि स्थानीय लोग टिकाऊ/वैकल्पिक पर्यटन विकास में निर्णायक भूमिका निभाएं। इस दिशा में जो कदम उठाने हैं उनमें से कुछ निम्नवत् हैं:

- अपने साथी स्थानीय लोगों में पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा करना,
- हर प्रकार के निर्माण कार्यों और भूमि उपयोग आदि पर कड़ी नजर रखना,
- गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधनों को अपनाना,
- गन्तव्य की निर्वहन क्षमता के निर्धारण के सम्बन्ध में अपने विचारों को सामने रखने का अधिकार,
- यदि आवश्यकता हो तो पर्यटन विकास आदि में प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयोग के विरूद्ध विरोध प्रकट करना।

सरकार, पर्यटन उद्योग और स्थानीय लोगों के मध्य विचारों के आदान प्रदान और क्रियाओं के द्वारा किए गए प्रयासों से ही उत्तरदायी पर्यटन को सफलता मिल सकती है।

बोध प्रश्न 2

1) उत्तरदायी पर्यटन की समस्याओं का उल्लेख कीजिए। विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों को पर्यटन में अधिक समस्याओं का सामना क्यों करना पड़ता है?

.....

.....

.....

2) "पर्यावरण के बचाव के संदर्भ में जैव विविधता का संरक्षण एक निर्णायक कारक है जिस पर विचार किया जाना चाहिए"। मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

3) "वैकल्पिक पर्यटन के विकास में सरकार एक सकारात्मक भूमिका निभा सकती है"। विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

10.6 सारांश

पर्यटन एक ऐसा विषय है जिसने सारे पर्यावरणीय विशेषज्ञों को दुनिया भर में चिन्तित कर रखा है। पर्यटक विभिन्न स्थानों का अवकाश और मनोरंजन के लिए भ्रमण करते है और बुनियादी तौर पर वह अच्छा समय व्यतित करने आते हैं। उनका ये व्यवहार अनुचित नहीं है। ये उस समय अप्रिय हो जाता है जब वे ऐसे स्तर की सुविधाएं लेने के लिए आग्रह करते हैं जो स्थानीय संसाधनों को क्षतिग्रस्त करती हैं और वह ये आग्रह इस प्रकार करते हैं कि या तो स्थानीय लोग उदासीन होकर दूर हो जाते हैं या इस हद तक पूरा करते हैं कि परिणाम स्वरूप स्थानीय सांस्कृतिक प्रारूप रूपान्तरित या विकृत हो जाता है। ये बात विशेषरूप से जनजातीय क्षेत्रों में या ऐसे क्षेत्रों में जहाँ के स्थानीय समुदाय भाषाई या सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत अल्प संख्या में हैं सुस्पष्ट हो जाती है। इस इकाई में हम ने सामूहिक पर्यटन द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त समस्याओं के उत्तर के रूप में वैकल्पिक पर्यटन को परखने का प्रयास किया है। वैकल्पिक पर्यटन अपने आप में पर्यटन का एक बहुत जटिल स्वरूप है किन्तु इसके साथ ही ये अपनी कार्य योजना के प्रतिपादन के विषय में बहुत से प्रश्न उठाता है जो सैद्धान्तिक और व्यवहारिक स्तरों पर अलग अलग नतीजे प्रदर्शित करते हैं। हम ने सरकार की नीतियों की सहायता से इन समस्याओं पर काबू पाने के उपायों पर भी विचार किया है। इस इकाई ने आपको वैकल्पिक पर्यटन के लाभों से परिचित कराया और वैकल्पिक पर्यटन को पर्यावरण संरक्षण के लिए एक उचित पर्यटन के रूप में वर्णित किया गया है तथा इसी संदर्भ में स्थानीय निवासियों के दायित्व को भी स्पष्ट किया गया है।

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) वैकल्पिक पर्यटन निसंदेह पर्यटन की समस्याओं का हल प्रस्तुत करता है। अपने उत्तर को भाग 10.2 के आधार पर लिखिए।

2) अपने उत्तर के लिए उपभाग 10.2.1 और 10.2.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) विश्वस्त पर्यटन की विभिन्न समस्याओं पर भाग 10.4 में विचार किया गया है। प्रश्न के दूसरे भाग के लिए हम हवाई के अनुभव का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं जिसने उत्तरदायी पर्यटन के प्रति सरकार के रवैये के कारण कुछ समस्याओं का सामना किया है।

2) बढ़ते हुए पर्यटन उद्योग ने पर्यावरणीय निम्नीकरण की समस्या को घटाने के लिए एक प्रकार के वैकल्पिक पर्यटन का प्रस्ताव रखा। किन्तु वैकल्पिक पर्यटन भी क्रमशः नए गन्तव्यों की खोज करते हुए पर्यावरण के लिए संकट उत्पन्न करता है।

3) पर्यटन की नीतियों में सरकार ने महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई है। आपका उत्तर उपभाग 10.5.1 पर आधारित होना चाहिए। उत्तर में यह उजागर होना चाहिए कि किस प्रकार सरकार पर्यटन उद्योग को आय पैदा करने वाला क्षेत्र घोषित करने में द्विविधा अनुभव कर रही है और उसके विस्तार को इस उद्योग द्वारा खड़े किए गए संकटों को कम करने के लिए सीमित कर रही है।

इस खण्ड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. कारसन : *द सी एराउण्ड अस*, ओ यू पी, न्यूयार्क 1951

आर. कारसन : *साइलेन्टस्प्रिंग*, हॉटन मिफ़लिन न्यूयार्क 1962

आर. मेश : *द राइट्स ऑफ नेचर*, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन प्रेस, मैडीसन, 1989

माधव गेडगिल एण्ड राम चन्द्र गुहा : *दिस फिशर्ड लैण्ड एन इकालॉजिकल हिस्ट्री आफ इण्डिया*, ओ यू पी, दिल्ली, 1992

ए.वी. सिएटन (एड) : *टूरिज्म, द स्टेट आफ द आर्ट*, जॉन विली न्यूयार्क, 1994

विद्या निवास मिश्रा (एड) : *क्रीएटिविटी एण्ड एन्वाएरॉनमेन्ट*, साहित्य एकेडेमी, नई दिल्ली, 1992

खान, ऑलसेन वार (एड) : *वी एन आर के एनसाइक्लोपीडिया आफ हॉस्टपीटेलिटी एण्ड टूरिज्म*, न्यूयार्क 1993

वरनेस वुल्फगैंग (एड) : *आस्पेक्ट्स आफ इकॉलॉजिकल प्राब्लम्स एण्ड एनवाएरॉनमेन्टल अवेएरनेस इन साउथ एशिया*, मनोहर, नई दिल्ली 1993

इस खण्ड के लिए कुछ अभ्यास

अभ्यास 1

हमें प्रसन्नता है कि आप ने इस खण्ड का अध्ययन किया। अब इकाई 8 से प्राप्त सूचनाओं को उपयोग में लाकर अपने नगर/क्षेत्र/प्रदेश के लिए एक पर्यटन विकास की ऐसी योजना बनाइए जो पर्यावरण के हितों को मित्रवत देखें।

अभ्यास 2

वैकल्पिक पर्यटन के सम्बन्ध में अपने ज्ञान के आधार पर अपने नगर/क्षेत्र/प्रदेश में चल रही पर्यटन विकास योजना के जैसी ही एक योजना बनाकर लिखिए।

अभ्यास 3

अपने क्षेत्र के होटलों, रेस्तराओं और दुकानों द्वारा कूड़े करकट के निपटाने के लिए काम में लाए जाने वाले उपायों की तुलना और विश्लेषण कीजिए।

अभ्यास 4

क्या आप अपशिष्ट के पुन: प्रयोग की योजनाओं के विषय में जानते हैं यदि नहीं तो ऐसे लोगों से पूछिये जो इस बारे में जानते हों।

अभ्यास 5

अपने क्षेत्र में प्रकृति क्लब या संस्था स्थापित कीजिए और पर्यावरण संबन्धी शिक्षा दीजिए।

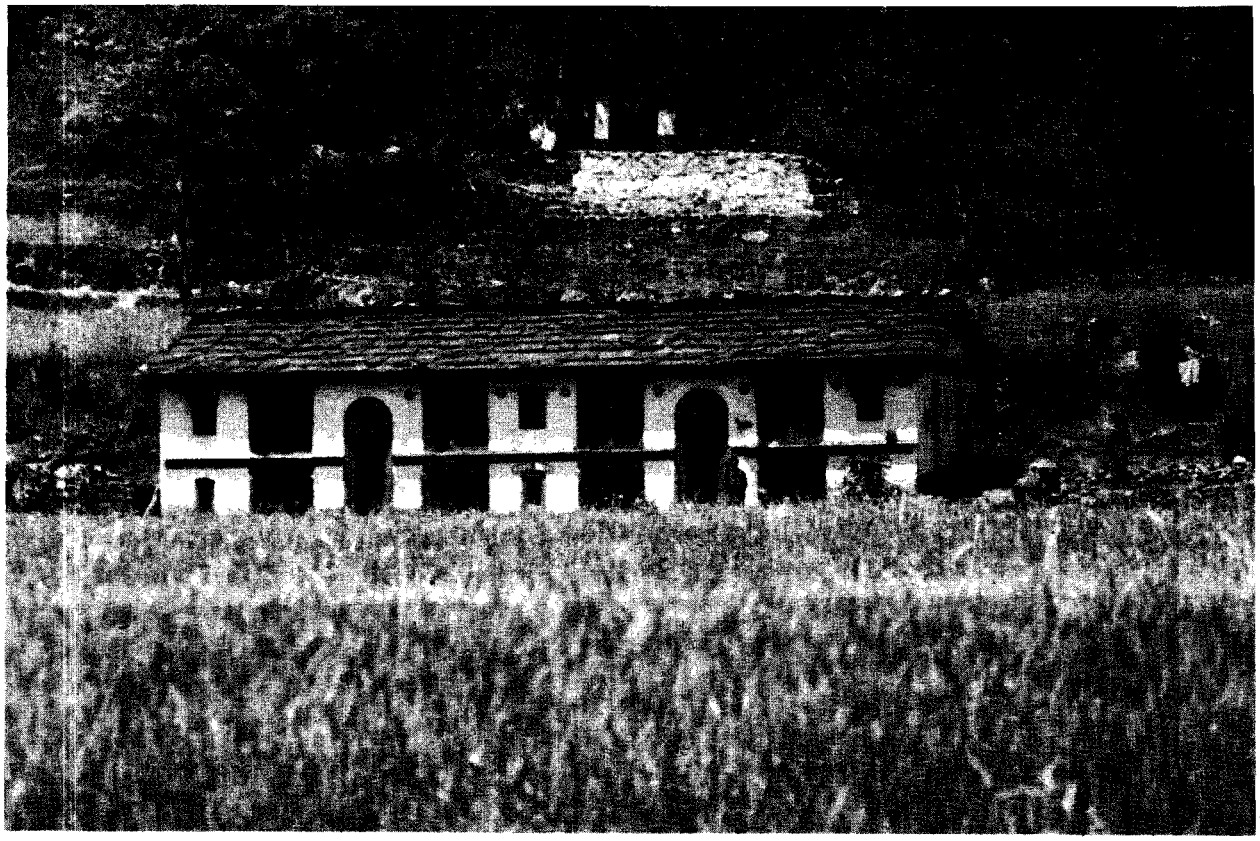

क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं

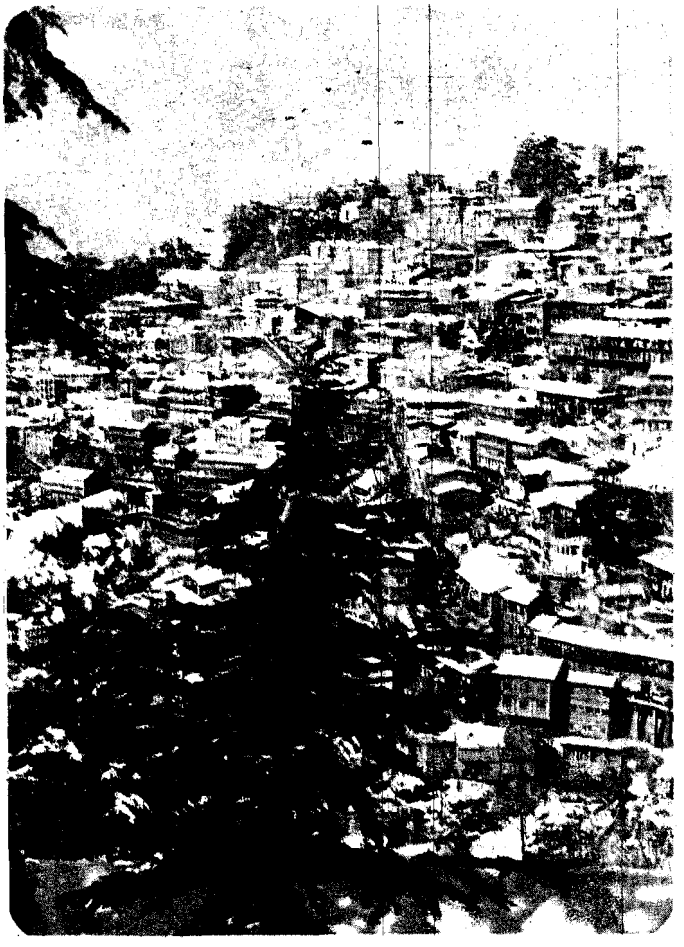

पर्वतीय स्थलों पर भीड़